शेख़ फ़रीद – सबद ५५

फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥
जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥५१॥

सार: वास्तविक जीवंतता सिर्फ़ दिल की धड़कन से कहीं बढ़कर है, इसकी पहचान उस मौजूदगी में निहित है जो पूर्णता को दर्शाती है। हम दुनिया को दिखाई तो दे सकते हैं लेकिन हो सकता है कि हमारी अंतरात्मा सुन्न हो और हमारी भीतरी भावनाएँ बेजान हों। सच्ची जीवंतता वहीं पनपती है जहाँ सच्चाई स्पष्टता और ईमानदारी के साथ गूँजती है जहाँ हमारा बाहरी रूप हमारे भीतरी रूप के साथ तालमेल बिठाता है। यह अखंडता ऐसे प्रेम के द्वार खोलती है जो किसी पर अधिकार जमाने की भावना से मुक्त हो, ऐसे कार्यों की ओर ले जाती है जो शुद्ध और बेदाग हों और ऐसे संवाद को संभव बनाती है जो ईमानदार और सीधा-सच्चा हो। जीवंतता का सच्चा अनुभव तब होता है जब हम जीवन को सिर्फ़ गुज़ारते नहीं बल्कि उसमें सक्रिय रूप से शामिल होते हैं।

फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥
फ़रीद कहते हैं कि शरीर से ख़ून की एक बूंद भी नहीं बहेगी, भले ही उसे काट दिया जाए। यह ऐसी स्थिर मानसिकता को दर्शाता है कि अत्यंत तीव्र घटनाएँ भी क्रोध या द्वेष जैसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न नहीं कर पातीं।

जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥५१॥
जो शरीर सर्वव्यापी सत्ता में रचे-बसे होते हैं, उनमें रक्त नहीं होता। यह दृष्टिकोण में 'कीमियाई' अर्थात गहन आंतरिक बदलाव को इंगित करता है जिसमें चेतना का अनंत प्रवाह ही सीमित मानवीय अस्तित्व को धारण करता है। (५१)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद उस अवस्था का वर्णन करते हैं जिसमें व्यक्ति की आंतरिक संरचना में मौलिक परिवर्तन आ जाता है। इस अवस्था में स्थिरता इतनी गहरी होती है कि तीव्र भावनाएँ और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ भी कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करतीं। इस दृष्टिकोण में 'कीमियाई' बदलाव का संकेत है जहाँ 'स्व' का अस्तित्व अहंकार और आवेगों पर आधारित नहीं रहता बल्कि इसके विपरीत वह चेतना के उस अनंत प्रवाह के साथ सामंजस्य बिठाता है जो हमारे सीमित मानवीय अस्तित्व में निरंतर व्याप्त है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com